ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

SANSKRITIK PRAVHA

Research Journal

Volume-1 No. 2 August, 2014

Bi- annual Bi-lingual

A Multi Disciplinary Refereed Research Journal
Dedicated to Socio-Cultural Harmony.

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर

All India Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 500/- (Annual)	Rs. 2200 (5 years)
Reseach Scholars/ Students	-	Rs. 200/- (Annual)	Rs. 900 (5 years)
Teachers / Others	-	Rs. 200/- (Annual)	Rs. 900 (5 years)
Single Copy	-	Rs. 125/- (Annual)	

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of
Editor, Sanskritik Pravah, Jaipur

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the **'Sanskritik Pravah'** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

सांस्कृतिक प्रवाह

803, वेदांग हाईट्स, नन्दपुरी, प्रताप सर्किल के पास,
प्रतापनगर, जयपुर-302033
e-mail : editorsprj@gmail.com
website : www.sisnet.co.in
Contact : 0141-2973369 (Off.), 094143-12288 (Editor)

Published by : Prof. Ashutosh Pant, Secretary
All India Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
803 Vedang Eights, Nandpuri, Pratapnagar, Jaipur-302033

Printed at : Print O Land, Sudarshan Pura Industrial Area, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

वर्ष 1 अंक 2 अगस्त 2014

अर्द्धवार्षिक द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए
समर्पित एक बहु-विषयात्मक शोध पत्रिका

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान,

803, वेदांग हाईट्स, नन्दपुरी, प्रताप सर्किल के पास, प्रतापनगर, जयपुर-302033

Sanskritik Pravah

Patron

Sh. Ram Prasad : Social Worker, Jaipur

Editorial Advisory Board

Prof. M. L. Chhipa : Vice Chancellor
A.B. Vajpeyi Hindi University, Bhopal

Prof. Bhagirath Singh : Vice Chancellor
Raffles University, Nimrana (Raj.)

Prof. K.G. Sharma : Professor, Deptt of History & Indian Culture
Rajashtan University, Jaipur

Sh. Mujaffar Husain : Journalist
& Padamshri Awardee, Mumbai

Prof. P. K. Dashora : Professor, Maharana Pratap University of
Agriculture & Technology, Udaipur

Dr. Kuldeep Chandra Agnihotri : Director, Himachal Research Institute,
Chakmoh - Hamirpur (H.P.)

Chief Editor

Dr. J. P. Sharma : Ex- Professor & Head
Deptt. of Economic Admin. & Financial Management
Rajasthan University, Jaipur

Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal : Ex- Principal, Govt. Law College,
Kota & Sriganganagar (Raj.)

Editorial Board

Prof. Ashutosh Pant : Director, S. K. Technical Campus, Sitapura, Jaipur

Dr. Sheela Rai : Associate Professor, Deptt. of Pol. Science,
Rajasthan University, Jaipur

Dr. Sunil Asopa : Associate Professor, Deptt. of Law
J.N.V. University, Jodhpur

Dr. Vinod Sharma : Associate Professor
Ramanandacharya Sanskrit University, Jaipur

Dr. Premlata Swarnkar : Lecturer, Geography, Govt. Meera Girls College, Udaipur

अनुक्रमणिका/ CONTENTS

		पृष्ठ संख्या
	अपनी बात ...	7
1.	इंटरफेथ वार्तालाप : ईसाइयत की व्युहात्मक पहल – भूषण दामले	9
2.	वंशावली परम्परा का प्रर्वतक एवं पौषक पौराणिक वाङ्मय – डॉ. सूरज राव	27
3.	वैदिक ऋषिकाएँ एवं वंश संरक्षण – डॉ. विनोद कुमार शर्मा	35
4.	भारतीय स्त्रीत्व के स्वर्णिम युग वैदिक काल में नारी – संगीता शर्मा	41
5.	जम्मू–कश्मीर रियासत का भारत में विलय एवं अनुच्छेद 370 – एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण – डॉ. शिवकुमार मिश्रा	53
6.	श्रीमद्भगवद्गीता में त्याग एवं सामाजिक समता के सूत्र – भरत कुमार	63
7.	वाल्मीकि रामायण में प्रजातांत्रिक चेतना – डॉ. सतीश चन्द अग्रवाल	70
8.	लोक आस्था का केन्द्र तीर्थराज पुष्कर – डॉ. गोपाल शरण गुप्ता	82
9.	Gram Sabha - A Step towards Swaraj – Dr. Priyanka Mathur	89
10.	पुस्तक समिक्षा : विभिन्नता– पाश्चात्य सार्वभौमिकता को भारतीय चुनौती – डॉ. लेखा अग्रवाल	96
11.	विमोचन	98

लेखक परिचय

1. **भूषण दामले**
   सामाजिक कार्यकर्त्ता, मुम्बई

2. **डॉ. सूरज राव**
   पोस्ट डॉक्टराल फैलो, राजस्थानी विभाग,
   सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय
   मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) 313001

3. **डॉ. विनोद कुमार शर्मा**
   सह आचार्य एवं ज्योतिष विभागाध्यक्ष
   जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

4. **संगीता शर्मा**
   सह आचार्य, इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

5. **डॉ. शिवकुमार मिश्रा**
   व्याख्याता- इतिहास, राजकीय महाविद्यालय, कोटा

6. **भरत कुमार**
   असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
   महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

7. **डॉ. सतीश चन्द अग्रवाल**
   व्याख्याता एवं विभागाध्यक्ष,
   राजनीति विज्ञान विभाग, स्टेनी मेमोरियल पी.जी.कॉलेज, जयपुर

8. **डॉ. गोपाल शरण गुप्ता**
   शोध सहायक
   राजस्थान अध्ययन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

9. **Dr. Priyanka Mathur**
   Faculty of Sociology,
   University of Rajasthan, Jaipur(Raj)

10. **डॉ. लेखा अग्रवाल**
    व्याख्याता-समाज शास्त्र,
    राजकीय महाविद्यालय, जयपुर (राज.)

अपनी बात

पाठकों के समक्ष शोध पत्रिका के द्वितीय अंक को प्रस्तुत करते हुए हर्ष हो रहा है। प्रथम अंक की तैयारी में समय एक वर्ष से अधिक लग गया था। इस अंक के प्रकाशन में भी आठ माह गुजर गये। ऐसा भी नहीं था कि पर्याप्त संख्या में शोध पत्र प्राप्त नहीं हुए हों। अनेक विषयों पर बहुत से शोध पत्र प्रकाशनार्थ प्रस्तावित थे, परन्तु सामाजिक समन्वय से जुड़े जिन विषयों पर शोध को हम आगे बढ़ाना चाहते हैं, उनके संबंध में शोध पत्रों का अकाल ही दिखाई दिया।

सामाजिक समन्वय नारे लगाने से या भाषण देने भर से नहीं होगा। 'हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई-हम सब हैं भाई-भाई' के नारे आजादी के पूर्व और बाद में भी बहुत लगे, परन्तु पाकिस्तान के निर्माण को रोका नहीं जा सका। आजादी के बाद भी हिन्दू-मुसलमानों में खाई बढ़ती ही गई। अच्छा-अच्छा बोलते रहो परन्तु समस्या का विश्लेषण न करो। छः वर्ष पूर्व इस शोध पत्रिका की प्रकाशन संस्था अ.भा. संस्कृति समन्वय संस्थान के प्रयास से कोटा में विश्वविद्यालय तथा विधि महाविद्यालय के तत्वावधान में 'भारत में अल्पसंख्यक-संवैधानिक, जनांकिकीय एवं सामाजिक पक्ष' विषय पर अखिल भारतीय सेमीनार का आयोजन प्रस्तावित था। तैयारियाँ भी पूरी हो गयी थीं। परन्तु 'अल्पसंख्यक' जैसे विषय आज अछूत मान लिये गये हैं। इसलिए कुछ लोगों ने अथक प्रयास कर तत्कालीन सरकार एवं महामहिम राज्यपाल के माध्यम से दबाव डलवाकर सेमीनार को स्थगित करा दिया। ऐसी सोच से सामाजिक समन्वय नहीं होगा। विषय के अच्छे-बुरे सभी पहलुओं पर शोध व चिंतन चाहिए।

इस शोध पत्रिका को प्रकाशित करने के पीछे एक स्पष्ट दृष्टि है। सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता व सांस्कृतिक चेतना जैसे व्यापक फलक वाले विषयों के साथ ही जाति-सम्प्रदायों का उद्‌गम-विकास, एकाधिक पंथों के लिए श्रद्धेय लोक देवता, अल्पसंख्यकवाद मतांतरण, वंशावली, जनसंख्या असंतुलन, प्रकृतिपूजक समाज, जनजातीय समाज जैसे विषयों का चयन भी किया गया जो या तो सामाजिक समन्वय को पुष्ट करते हैं या फिर इसे चोट पहुँचाते हैं। ऐसे सारे विषयों पर व्यापक शोध व चिंतन की आवश्यकता है। परन्तु ये विषय ऐसे हैं जिन पर पर्याप्त शोध कार्य नहीं हो रहा है। हमारी यह पत्रिका इन विषयों पर शोध के लिए विद्‌वत जनों व शोधार्थियों को प्रेरित कर सके इसी कामना के साथ यह सारी भागदौड़ हो रही है।

प्रतिक्रिया भेजें

सुधी पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका के कलेवर तथा इसमें प्रकाशित शोधपत्र, आलेख आदि सामग्री पर अपनी प्रतिक्रिया भिजवाएं। आपके विचारों को अगले अंक में प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता होगी।

शोध के लिए निर्धारित विषयों पर सम्पन्न सेमीनार, संगोष्ठी जैसी गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें प्रकाशनार्थ अवश्य भिजवाएं।

– सम्पादक

सांस्कृतिक प्रवाह (शोध पत्रिका)

शोध पत्रिका का उद्देश्य

भारत जैसे विविधताओं वाले देश में सांस्कृतिक विरासत को सहेज कर राष्ट्र की एकता, अखण्डता व सामाजिक समरसता सुनिश्चित करने की दिशा में सामाजिक अध्ययन व शोध को बढ़ावा देना .....

शोध के मुख्य विषय

1. राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता व सांस्कृतिक चेतना के विविध आयाम (यथा अवधारणा, आवश्यकता, महत्वपूर्ण घटक, इतिहास, वर्तमान दशा आदि)।
2. विभिन्न जातियों, सम्प्रदायों का उद्‌गम, इतिहास, उनकी विविध शाखाऐं व उनमें समानताएं।
3. लोक देवता व एकाधिक पंथों/ जातियों में उनकी मान्यता।
4. अल्पसंख्यक- बहुसंख्यक अवधारणा (विश्व एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य) (दशा, दिशा, सामाजिक समरसता, संवैधानिक प्रावधान, न्यायिक झुकाव आदि)
5. जननांकीय असंतुलन (इतिहास, परिणाम, कारण, वर्तमान दशा व प्रभाव आदि)।
6. वंशावली संरक्षण, संवर्द्धन व संवहन (इतिहास, परम्परा, वर्तमान दशा, समाज पर प्रभाव आदि)।
7. मतांतरण (जननांकीय प्रभाव, विधि पक्ष, सामाजिक सौहार्द्र, विश्व परिप्रेक्ष्य आदि)।
8. परावर्तन (अवधारणा, शास्त्रीय आधार, महत्व, आवश्यकता, अवरोधक तत्व आदि)।
9. प्रकृतिपूजक समाज (विश्व एवं भारतीय दृष्टिकोण)।
10. जन जातीय समाज में धर्म, मान्यता, लोक परम्परा, लोक विश्वास एवं लोकाचार ।